● सुनो और गाओ :

८. माँ

प्रकृति का प्रारूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

ममता का सागर हो तुम ।
समता की गागर हो तुम ।
सरल, सहज, सुरूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

संस्कारों की ज्योति जलाती ।
जीवन का आधार सजाती ।
ऐसी अजब, अनूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

माँ! ब्रह्मांड स्वरूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

– रमेश यादव

१. कोष्ठक के उचित वर्ण से रिक्त स्थान भरो : (ग, सु, आ, रों, सं, ऐ, ति, रू, नू, जी, धा)

—सी, ज—त, ज्यो—, ——प, —वन, —स्का—, ——र, अ—प ।

२. उत्तर लिखो :

(क) जगत का रूप कौन है ?

(ख) माँ किसकी ज्योति जलाती है ?

❑ विद्‌यार्थियों को साभिनय गीत सुनाएँ और उनसे दोहरवाएँ । सामूहिक अभिनय के साथ गाने के लिए कहें । कविता की लयात्मकता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उचित लय में गीत गवाएँ । विद्‌यार्थियों से कविता के आधार पर ऊपर के अधूरे शब्दों की पूर्ति करवाएँ ।